शोध संचयन
A Refereed Research Journal
And a complete Periodical dedicated to
Humanities & Social Science Research
ISSN 0975 1254 (PRINT)
ISSN 2249-9180 (ONLINE)
www.shodh.net
Vol. 9
Issue 1
15 January, 2018

सी०बी०एस०ई० बोर्ड के कक्षा १२ के विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों में जोखिम व्यवहार एवं प्रतियोगी व्यवहार के मध्य सहसम्बन्ध

बीज शब्द :

सी.बी.एस.ई. बोर्ड, विज्ञान वर्ग, जोखिम व्यवहार, प्रतियोगी व्यवहार, सहशिक्षा विद्यालय।

जोखिम व्यवहार एवं प्रतियोगी व्यवहार के मध्य सम्बन्ध को जानने के लिए सी0बी0एस0ई0 बोर्ड के सहशिक्षा विद्यालय के विज्ञान वर्ग के 59 विद्यार्थियों (छात्र n = 32, छात्राएं n = 27) को सम्मिलित किया गया व परिणाम प्राप्त हुआ कि जोखिम व्यवहार एवं प्रतियोगी व्यवहार के मध्य परिमित धानात्मक सहसम्बन्ध है।

*****

प्रज्ञा राजपूत
शोधछात्रा, शिक्षा संकाय
वनस्थली विद्यापीठ, राजस्थान
E-mail: ppragya20989@gmail.com

डॉ० सुजीत कुमार
एसोसिएट प्रोफेसर, शिक्षा संकाय
गुरू घासीदास सेन्ट्रल यूनीवर्सिटी (GGDCU)
बिलासपुर, छत्तीसगढ़

सी०बी०एस०ई० बोर्ड के कक्षा १२ के विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों में जोखिम व्यवहार एवं प्रतियोगी व्यवहार के मध्य सहसम्बन्ध

शिक्षा का मानव जीवन में अत्याधिक महत्त्व है। शिक्षा आयोग (1964-66)[1] ने अपने प्रतिवेदन में शिक्षा के महत्त्व को दर्शाते हुये लिखा है कि ''देश की आकांक्षाओं की प्राप्ति में उसके समस्तजनों के ज्ञान, कौशलों, हितों और मूल्यों में परिवर्तन निहित है। यदि बिना किसी हिंसात्मक क्रान्ति के बड़े पैमाने पर यह परिवर्तन करना है तो केवल एक ही साधन है, जिसका प्रयोग किया जा सकता है और वह है शिक्षा''। भारत में औपचारिक शिक्षा के तीन स्तर हैं- प्राथमिक शिक्षा, माध्यमिक शिक्षा तथा उच्च शिक्षा। माध्यमिक शिक्षा को दो भागों में विभाजित किया गया है। प्रथम, कक्षा 9 से 10 तक निम्न माध्यमिक शिक्षा व द्वितीय, कक्षा 11 से 12 तक उच्च माध्यमिक शिक्षा। माध्यमिक शिक्षा को शिक्षा रूपी जीवन की रीढ़ की हड्डी भी कहा जाता है (एस0पी0 गुप्ता तथा अलका गुप्ता)[2]।

उत्तर प्रदेश में शिक्षा के तीन बोर्ड हैं 1. यू0पी0 बोर्ड, 2. सी0बी0एस0ई0 बोर्ड, 3. आई0सी0एस0ई0 बोर्ड सन् 1929 में एक संयुक्त बोर्ड की स्थापना की गयी जिसका नाम 'बोर्ड आफ हाई स्कूल एण्ड इण्टरमीडिएट एजुकेशन राजपूताना' रखा गया। 1952 में इस बोर्ड में संगठनात्मक संशोधन हुए व विस्तार क्षेत्र बढ़ाकर इसका नाम केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड कर दिया गया अंतत: 1962 में बोर्ड का पुनर्गठन किया गया। 26.07.2017 तक कुल 19316 विद्यालय बोर्ड से सम्बद्ध हैं (cbse.nic.in/newsite/aboutcbse_hindi.html)[3]। वर्ष 2017-2018 में कुल 11,86,306 विद्यार्थियों ने कक्षा 12 के लिए आवेदन प्रस्तुत किया था। (https://hindustantimes.com)[4] किशोरावस्था में विद्यार्थी कुछ नया कार्य या क्रिया करके सबका ध्यान अपनी ओर आकर्षित करने का प्रयास करते हैं इसी कारण वह कई बार खतरा उठाते हैं इन क्रियाओं के पीछे उनके व्यवहार का होता है जिसे जोखिम व्यवहार करते हैं। यदि विद्यार्थी अद्यिगम के दौरान कठिन कार्य को चुनता है, मित्रों के प्रभाव में आकर उनके अनुसार विषयों का चयन करता है व कक्षा में अनुपस्थिति इत्यादि क्रियाऐं करता है तो यह शैक्षिक जोखिम व्यवहार कहलाता है। राठ तहसील के सहज़िक्षा विद्यालय के कक्षा XII के यू0पी0 बोर्ड व सी0बी0एस0ई0 बोर्ड के विज्ञान, कला एवं वाणिज्य वर्ग के छात्र-छात्राओं का अधिगम के समय कठिन कार्य को चुनना, कठिन प्रश्नों का उत्तर देना, अपनी योग्यता के अनुसार विषयों का चयन न करना, विद्यालय की निर्धारित उपस्थिति को पूरा न करना आदि क्रियाओं को छात्र एवं छात्राओं के द्वारा अधिकांशतया पाया गया है जोकि सफलता, प्रतिस्पर्धा, जिज्ञासा, निराशा, ध्यान, दबाव व प्रभाव जैसे घटकों से सम्बन्धित हैं। अत: इन सभी घटकों के सम्मिलित समूह को जोखिम लेने का व्यवहार माना गया है। वर्तमान समय में शिक्षा के क्षेत्र में प्रतियोगिता बढ़ गयी है व विद्यार्थी स्वयं को इस दौड़ में अव्वल रखने के लिए अनेक प्रयास करते हैं और इसी क्रम में वह जोखिम व्यवहार भी उठाता है। राठ तहसील के सहशिक्षा विद्यालय के कक्षा XII यू0पी0 बोर्ड व सी0बी0एस0ई0 बोर्ड के विज्ञान, कला एवं वाणिज्य वर्ग के छात्र-छात्राओं की आपस में कक्षा-कक्ष में अधिगम के दौरान होने वाली अन्त:क्रिया जिसमें छात्र व छात्राऐं एक दूसरे से ज्यादा क्रियाशील रहते हैं व प्रतियोगिता करते हैं साथ ही कक्षा में होने वाली गतिविधियों में एक दूसरे से प्रतियोगिता करना व शिक्षा के क्षेत्र में स्वयं को आगे बनाए रखने की भावना आदि क्रियाओं को छात्र एवं छात्रओं के द्वारा अधिकांशतया पाया गया है जो कि मुख प्रतिक्रिया, गर्व, सक्रियता, जिज्ञासा, विषयवस्तु पूर्णता, नेतृत्व, इच्छानुकूलता, विश्वास व जुनून जैसे घटकों से सम्बन्धित हैं। अत: इन सभी घटकों के सम्मिलित समूह को प्रतियोगी व्यवहार माना गया है। Andrew, Leigh[5] ने निष्कर्ष दिया कि टीनएज लड़कियाँ ज्यादा प्रतियोगी होती हैं यदि वे सहशिक्षा विद्यालय में हैं। परिणामों के अनुसार एकल शिक्षा विद्यालय व सहशिक्षा विद्यालय की लड़कियों के प्रतियोगी चुनाव के मध्य भारी अन्तर है। Elizabeth S. Spelke[6] ने निष्कर्ष दिया कि महिला व पुरूष की जन्म से परिपक्वता तक की संज्ञानात्मक योग्यातायें इस दावे को प्रमाणित नहीं करती कि पुरूषों में गणित व विज्ञान के प्रति अच्छी मूलभूत अभिक्षमता पायी जाती है। G.Lee[7] ने अपने अध्ययन में निष्कर्ष दिया कि सहशिक्षा विद्यालय का मुख्य लाभ यह है, कि ये छात्र व छात्राओं के मध्य प्रतियोगिता को प्रोत्साहित करते हैं। B.A. Morrongiello[8] ने निष्कर्ष निकाला कि बच्चों के जोखिम लेने का स्वयं प्रतिवेदन, शिक्षक, माता-पिता और साथियों से सहसम्बन्धित है। बच्चों के जोखिम लेने के इरादे व उनके वास्तविक व्यवहार के बीच में करीबी समानता पायी जाती है। Uri Greezy, Muriel Niedrle and Aldo Rurtichini[9] के अनुसार पुरूष व महिला प्रतियोगी अलग-2 प्रतिक्रिया देते हैं जब वे एक दूसरे के विरूद्ध प्रतियोगिता करते हैं। Machamer Ann and Gruber Enid[10] ने निष्कर्ष दिया कि अमेरिकन भारतीय युवा, अफ्रीकन अमेरिकन युवाओं की तुलना में परिवार से कम जुड़ाव रखते हैं, व उनका शैक्षिक

प्रदर्शन स्तर भी निम्न है साथ ही वे उच्च जोखिम व्यवहार लेने में व्यस्त रहते हैं।

उद्देश्य -

सी0बी0एस0ई0 बोर्ड के विज्ञान वर्ग के कक्षा 12 में अध्ययनरत विद्यार्थियों में जोखिम व्यवहार एवं प्रतियोगी व्यवहार के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन करना।

परिकल्पना -

सी0बी0एस0ई0 बोर्ड के सहशिक्षा विद्यालय के विज्ञान वर्ग के कक्षा 12 में अध्ययरनत छात्र एवं छात्राओं के व्यवहार को जोखिम व्यवहार मापनी के घटकों (सफलता, प्रतिस्पर्धा, जिज्ञासा, निराशा, ध्यान, दबाव व प्रभाव) एवं प्रतियोगी व्यवहार मापनी के घटकों (मुख प्रतिक्रिया, जिज्ञासा, विषयवस्तु पूर्णता, नेतृत्व, इच्छानुकूलता, विश्वास व जुनून) पर मापा जाता है तब जोखिम व्यवहार एवं प्रतियोगी व्यवहार के मध्य सहसम्बन्ध में सार्थक अन्तर होता है।

जनसंख्या व न्यादर्श -

हमीरपुर (यू0पी0) जनपद के सहशिक्षा विद्यालय के विज्ञान वर्ग के कक्षा 12 के सी0बी0एस0ई0 बोर्ड के विद्यार्थियों को जनसंख्या एवं न्यादर्श के रूप में 59 विद्यार्थियों (छात्र = 32, छात्राऐं = 27) को स्तरीकृत प्रतिचयन विधि से चुना गया।

स्वनिर्मित उपकरण -

प्रस्तुत पत्र में लेखकों द्वारा स्वनिर्मित जोखिम व्यवहार मापनी व स्वनिर्मित प्रतियोगी व्यवहार मापनी का प्रयोग किया गया है। जोखिम व्यवहार मापनी की विश्वसनीयता $r = 0.8767$ तथा वैधता $\alpha = 0.7630$ है एवं प्रतियोगी व्यवहार मापनी की विश्वसनीयता $r = 0.816$ एवं वैधता $\alpha = 0.8236$ है।

प्रक्रिया एवं सांख्यिकीय -

सर्वप्रथम सी0बी0एस0ई0 बोर्ड के छात्र एवं छात्राओं के जोखिम व्यवहार को जोखिम व्यवहार मापनी एवं प्रतियोगी व्यवहार को प्रतियोगी व्यवहार मापनी से मापा गया तत्पश्चात् जोखिम व्यवहार एवं प्रतियोगी व्यवहार के मध्य सम्बन्ध को मापने के लिए जोखिम व्यवहार मापनी से प्राप्त कुल प्राप्तांक एवं प्रतियोगी व्यवहार मापनी से प्राप्त कुल प्राप्तांक के मध्य गुणनफल आघूर्ण सहसम्बन्ध लगाया।

विश्लेषण -

1. सी0बी0एस0ई0 बोर्ड के विज्ञान वर्ग के कक्षा 12 के 32 छात्रों का जोखिम व्यवहार मापनी से प्राप्त कुल प्राप्तांको का योग 4488 एवं प्रतियोगी व्यवहार मापनी से प्राप्त कुल प्राप्तांकों का योग 4533 है। इनके मध्य .666 सहसम्बन्ध गुणांक प्राप्त हुआ है। जो कि सांख्यिकीय सारणी मान .349 से अधिक है एवं .05 सार्थकता स्तर पर सार्थक है।

छात्रों की संख्या	जोखिम व्यवहार मापनी से प्राप्त मूल्य प्राप्तांको का योग	प्रतियोगी व्यवहार मापनी से प्राप्त मूल्य प्राप्तांको का योग	सहसम्बन्ध गुणांक (r)	सारणीमान	टिप्पणी
32	4488	4533	0-666	0-349	सार्थक

2. सी0बी0एस0ई0 बोर्ड के विज्ञान वर्ग के कक्षा 12 की 27 छात्राओं के जोखिम व्यवहार मापनी से प्राप्त कुल प्राप्तांको का योग 3918 एवं प्रतियोगी व्यवहार मापनी से प्राप्त कुल प्राप्तांको का योग 3918 हैं। इनके मध्य .512 सहसम्बन्ध गुणांक प्राप्त हुआ है जो कि सांख्यिकीय सारणी मान .381 से अधिक है एवं .05 सार्थकता स्तर पर सार्थक है।

छात्राओं की संख्या	जोखिम व्यवहार मापनी से प्राप्त मूल्य प्राप्तांको का योग	प्रतियोगी व्यवहार मापनी से प्राप्त मूल्य प्राप्तांको का योग	सहसम्बन्ध गुणांक (r)	सारणीमान	टिप्पणी
27	3918	3918	0-512	0-381	सार्थक

3. सी0बी0एस0ई0 बोर्ड के विज्ञान वर्ग के कक्षा 12 के कुल 59 विद्यार्थियों (छात्र = 32, छात्राऐं = 27) के जोखिम व्यवहार मापनी से प्राप्त कुल प्राप्तांको का योग 8406 है एवं प्रतियोगी व्यवहार मापनी से प्राप्त कुल प्राप्तांकों का योग 8451 है। इनके मध्य .604 सहसम्बन्ध गुणांक प्राप्त हुआ है जो कि सांख्यिकीय सारणीमान .250 से अधिक है एवं .05 सार्थकता स्तर पर सार्थक है।

छात्राओं की संख्या	जोखिम व्यवहार मापनी से प्राप्त मूल्य प्राप्तांको का योग	प्रतियोगी व्यवहार मापनी से प्राप्त मूल्य प्राप्तांको का योग	सहसम्बन्ध गुणांक (r)	सारणीमान	टिप्पणी
59	8406	8451	0-604	0-250	सार्थक

परिणाम -

1. सी0बी0एस0ई0 बोर्ड के विज्ञान वर्ग के कक्षा 12 के 32 छात्रों के जोखिम व्यवहार एवं प्रतियोगी व्यवहार के मध्य परिमित धनात्मक सहसम्बन्ध है।

2. सी0बी0एस0ई0 बोर्ड के विज्ञान वर्ग के कक्षा 12 की 27 छात्राओं के जोखिम व्यवहार एवं प्रतियोगी व्यवहार के मध्य परिमित धनात्मक सहसम्बन्ध है।

3. सी0बी0एस0ई0 बोर्ड के विज्ञान वर्ग के कक्षा 12 के कुल 59 विद्यार्थियों (छात्र = 32, छात्राऐं = 27) के जोखिम व्यवहार एवं प्रतियोगी व्यवहार के मध्य परिमित धनात्मक सहसम्बन्ध है।

सारांश –

सी0बी0एस0ई0 बोर्ड के हमीपुर जनपद के विज्ञान वर्ग के कक्षा 12 के कुल 59 विद्यार्थियों में जोखिम व्यवहार एवं प्रतियोगी व्यवहार के मध्य सहसम्बन्ध को मापा गया तो सहसम्बन्ध गुणांक r =k .604 है जो 0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक है तथा सहसम्बन्ध की शाब्दिक व्याख्या में परिमित धनात्मक सहसम्बन्ध है। कुल 59 विद्यार्थियों में से कुछ विद्यार्थियों की वजह से दोनों चरों (जोखिम व्यवहार व प्रतियोगी व्यवहार) में साथ–2 घटने या बढ़ने की प्रवृत्ति दिखायी दे रही है इसलिए जोखिम व्यवहार एवं प्रतियोगी व्यवहार के मध्य परिमित धनात्मक सहसम्बन्ध प्रदर्शित हो रहा है अत निष्कर्ष प्राप्त हुआ है कि सी0बी0एस0ई0 बोर्ड के विज्ञान वर्ग के कक्षा 12 में अध्ययनरत विद्यार्थियों के जोखिम व्यवहार एवं प्रतियोगी व्यवहार के मध्य सहसम्बन्ध है व दोनों व्यवहार एक–दूसरे को प्रभावित करते हैं।

संलग्नक –

रेखांचित्र 1.1 सी0बी0एस0ई0 बोर्ड के विद्यार्थियों का सहसम्बन्ध वितरण

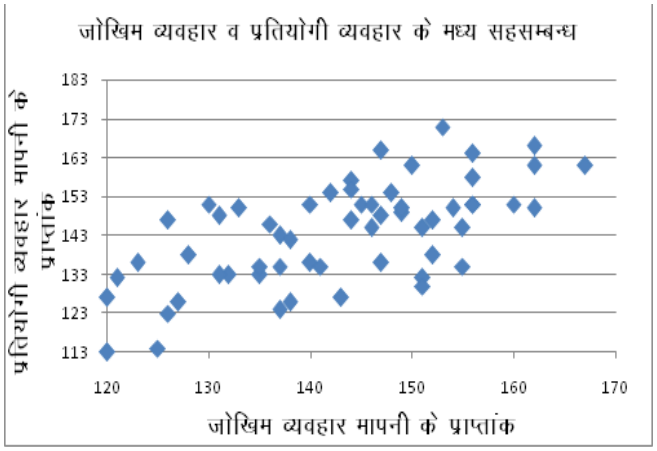

रेखाचित्र में y अक्ष पर 59 विद्यार्थियों के प्रतियोगी व्यवहार मापनी से प्राप्त प्राप्तांकों एवं x अक्ष पर 59 विद्यार्थियों के जोखिम व्यवहार मापनी से प्राप्त प्राप्तांको को प्रदर्शित किया है। ल अक्ष पर न्यूनतम प्राप्तांक 113 तथा अधिकतम प्राप्तांक 171 है तथा ग अक्ष पर न्यूनतम प्राप्तांक 120 तथा अधिकतम प्राप्तांक 153 हैं। बिन्दु विद्यार्थियों को प्रदर्शित कर रहे हैं, प्रत्येक बिन्दु एक विद्यार्थी द्वारा प्राप्त प्रतियोगी व्यवहार मापनी के प्राप्तांक तथा जोखिम व्यवहार मापनी के प्राप्तांक के मध्य सहसम्बन्ध दर्शाता है। रेखाचित्र में बिन्दुओं का फैलाव निचली बॉयी ओर से ऊपरी दॉयी ओर हल्की झुकी हुई रेखा के रूप में प्रवृत्त हो रहा है जो परिमित धनात्मक सहसम्बन्ध को इंगित करता है।

सन्दर्भ सूची :

1. दुआ, याचना (2010) : कक्षा XI के विद्यार्थियों में अपेक्षित व्यवहार हेतु संज्ञानात्मक स्तर पर जीव विज्ञान विषय का विश्लेषणात्मक अध्ययन, वनस्थली विद्यापीठ, पृ0सं0–1
2. गुप्ता, एस0पी0 तथा गुप्ता, अलका (2009) : ''भारतीय शिक्षा का इतिहास, विकास एवं समस्याऐं, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद, पृ0सं0–326
3. http://cbse.nic.in/newsite/aboutCbse_hindi.html , एक्सेसड ऑन 28.04.2018
4. https://www.hindustantimes.com/delhi-news/cbse-board-exams-starts-from-today-28-lakh-students-to-appear/story-GMF54nAcghZiHsJa1w17wL.html , एक्ससेड ऑन 28.04.2018
5. Leigh, Andrew (2009): ''गर्ल्स एट सिंगल सेक्स स्कूल आर मोर कॉम्पीटीटिव'', https://economics.com.au/2009/06/16/girls-at-single-sex-schools-are-more-competitive/ ,एक्सेसड ऑन 06.05.2012
6. Spelke, Elizabeth S. (2005) : ''सेक्स डिफरेन्स इन इनट्रिन्सिक एप्टीट्यूट फॉर मैथमेटिक्स एण्ड साइन्स'', अमेरिकन साइकालॉजिकल एसोसिएशन, वॉल्यू 60, नं0 9, http://www.harvardlds.org/wp-content/uploads/2017/01/spelke2005-1.pdf एक्सेसड ऑन 06.05.2012
7. Lee, G. (2010) : ''सिंगल सेक्स स्कूल वर्सेस कोएड स्कूल'', http://www.heliumcom/items/1723088-comparing-single-sexschools-and-co-edschools , एक्सेसड ऑन 05.08.2012
8. Morrongiello, B.A. (2004) : '' डू चिल्ड्रेन्स इन्टेन्सनस टू रिस्क टेक रिलेट टू एक्चुअल रिस्क टेकिंग'', इंजरी प्रिवेन्सन वाल्यू 10ए नं0 9ए पृ0सं0 62.64, http://injuryprevention.bmj.com/content/10/1/62 , एक्सेसड ऑन 29.04.2018
9. Greezy, uri, Neidrle, Muriel and Rurtichini, Aldo (2003) : ''परफॉर्मेन्स इन कॉम्पीटीटिव एनवायरनमेन्ट्स जेन्डर डिफरेन्सस्'', दक्वाटर्ली जनरल ऑफ इकनॉमिक्स'', वॉल्यू0 118ए इश्यू 3ए पृ0सं0 1049.1074, https://web.stanford.edu/~niederle/Gender.pdf , एक्सेसड ऑन 8.10.13
10. Machamer, Ann Marie and Gruber, Enid (1978) : ''सेकेण्डरी स्कूल, फैमिली एण्ड एजूकेशनल रिस्क: कम्पऐरिंग अमेरिकन इंडियन एडोलसेन्ट्स एण्ड देअर पीअरस्'', द जनरल ऑफ एजूकेशनल रिसर्च, वॉल्यू0 91, नं0 6, पृ0सं0 357–369, http://www.jstor.org/stable/27542179] ,क्सेसड ऑन 07.01.2017

◆◆◆